सुरभि समग्र

वर्ष- २४, अंक- ८ मूल्य: १०.०० रूपये जनवरी, २०१६

स्वागत २०१६

नया वर्ष
सतत हर्ष
सुरभि के पाठक,
नया वर्ष मुबारक

नूतनवर्षं वर्षतु हर्षम्

जीवन का लक्ष्य क्या?
"खुश रहो"

-दलाई लामा

'पृथ्वी की घूर्णन गति व अस्तित्व को खतरा'- शोध से भारतवर्ष का सम्मान बढ़ा

-डॉ. भरत राज सिंह

विश्व के सभी वैज्ञानिक एवं बुद्धिजीवी यह मान चुके है कि हमारी अनदेखी और गलतियों के कारण ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन का खतरा सम्पूर्ण विश्व एवं मानव जाति के अस्तित्व पर मंडरा रहा है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन न केवल जलवायु परिवर्तन, वातावरण एवं समुद्र के जल स्तर को प्रभावित कर रहा है, बल्कि यह हमारी सम्पूर्ण पृथ्वी के भूविज्ञान को बदल कर रख देगा।

दुनिया के अग्रणी पर्यावरणविद एवं वैज्ञानिक एवं स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के निदेशक प्रो० भरत राज सिंह ने मई २०१४ में अपनी बहुचर्चित पुस्तक "Global Warming Causes Impact & Remedies" में यह लिखा था कि ग्लोबल वार्मिंग अर्थात २ डिग्री वृद्धि के कारण हुयी बर्फ के के सिकुड़ने के जलप्लावन का है तथा इंग्लैण्ड आदि शहरों की समुद्र

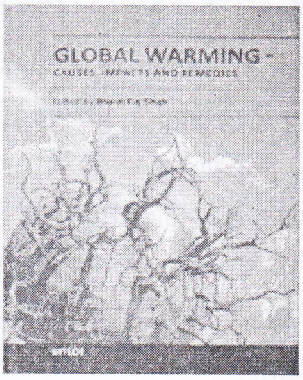

वैश्विक तापमान में सेन्ट्रीग्रेड तापमान की उत्तरी ध्रुव पर जमी पिघलने एवं ग्लेशियरों कारण तूफान व खतरा बढ़ता जा रहा अमेरिका, कनाडा व देशों के प्रमुख तटीय में डूबने की आशंका है। इसके साथ ही इनके समुद्री क्षेत्रों के आस-पास भारी बर्फबारी होगी एवं नए ग्लेशियरों का निर्माण होगा। इसके कारण इन शहरों में रहने वाली आबादी को कहीं अन्यत्र विस्थापित करना पड़ेगा। प्रो० सिंह की राय के अनुसार, सम्पूर्ण विश्व की ध्रुवीय हिम चट्टानों के पिघलने से २०४० तक उत्तरी ध्रुव पर नाम मात्र की बर्फ बचेगी।

नेचर साइन्स पत्रिका एवं अन्य सर्वे की माने तो विश्व के ९९.५:% ग्लेशियर केवल अन्टार्कटिक व ग्रीन लैण्ड में हीं हैं, जो कि यदि पिघल जाएँ तो समुद्र के जल स्तर में ६३ मीटर या २०० फिट की बढ़ोत्तरी हो सकती है।

अप्रैल २००३ से अप्रैल २०१२ तक के आंकड़ों की समीक्षा के अनुसार आर्कटिक क्षेत्र में बर्फीली चट्टानें १० लाख टन प्रतिवर्ष की दर से पिघल रही हैं। २१वीं सदी के अन्त तक समुद्र तल में ३.५ फीट से लेकर १३ फीट की बढ़ोत्तरी की सम्भावना बन रही है जो ध्रुवीय क्षेत्र की बर्फ के पिघल कर समुद्र में पानी में मिल जायेगी एवं पृथ्वी में ध्रुवीय बर्फ का भार हटकर समुद्र के पानी में क्रमशः ३९७ अरब टन से १४५० अरब टन तक बड़ा देगा जिससे पृथ्वी के घूर्णन कोण २३.४३ डिग्री में व गति में परिवर्तन हो जायेगा तथा एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाय।

अलबर्टा विश्वविद्यालय के शोधकर्ता प्रो० मैथ्यू डर्बी ने भी

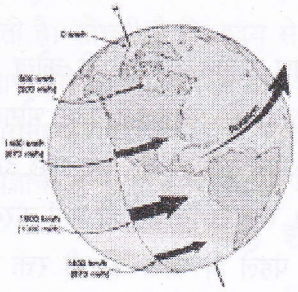

प्रो० सिंह के शोध कार्य की पुष्टि अपने एक लेख में किया है कि ध्रुवीय बर्फ के भार में परिवर्तन के कारणों से पृथ्वी की घूर्णन गति धीमी हो सकती है और रात-दिन का समय भी २४ घण्टे से अधिक बढ़ सकता है। प्रो० सिंह के इस शोध कार्य से विश्व में भारत का सिर सम्मान से ऊँचा हुआ है तथा पूरी दुनिया में एक सन्देश गया है कि जलवायु परिवर्तन एक अहम् खतरा बन चुका है।

भारत वर्ष भी विभीषिकाओं से अछूता नहीं है क्योंकि यह तीन तरफ से समुद्र व एक तरफ हिमालय से घिरा है। इससे समुद्री क्षेत्रों के आस-पास के क्षेत्र में भीषण बारिश व हिमालय से सटे प्रदेशों में भीषण ठंढ व बर्फबारी का प्रकोप बढ़ गया है। विगत कुछ वर्षों में जहाँ जम्मू-कश्मीर में भयानक बाढ़ की स्थिति बनी तो वहीं केदारनाथ जैसे पहाड़ों में ग्लेश्यिर के फटने के कारण तबाही मची, समुद्र तट पर बसे उड़ीसा, मुंबई एवं चेन्नई में चक्रवाती बारिश ने जन-जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया। भारत का बेहद उपजाऊ क्षेत्र, उत्तर प्रदेश व बिहार में आगे सूखाग्रस्त होने की संभावनाएं बढ़ रहीं हैं।

हाल में ही पेरिस में विश्व के सभी राष्ट्रों ने मिल कर यह संकल्प किया है कि वे कार्बन के उत्सर्जन में कमी लायेंगे तथा ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का प्रयास करेंगे। प्रो० सिंह का कहना है कि अभी भी हम 'जलवायु-परिवर्तन की इस विभिषिका से बच सकते है यदि हम हाइड्रोकार्बन आधारित ऊर्जा प्रणाली के स्थान पर अक्षय ऊर्जा का उपयोग अधिक से अधिक करने की नयी तकनीक अपनायें।

-निदेशक, स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज,
लखनऊ, मोव ९९३५०२५८२५,
email: brsinghlko@yahoo-com